

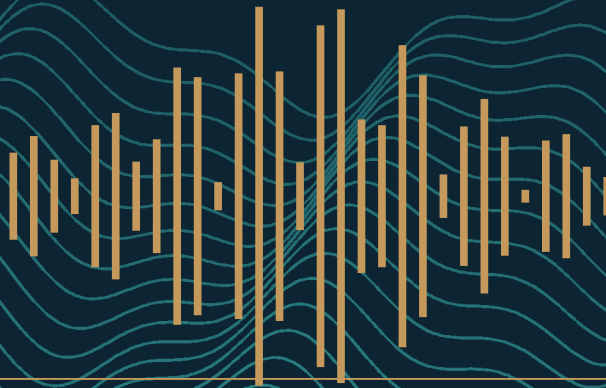
गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ४४

मैथिली रेडियो नाटक

स्वयं सीखू मार्गदर्शिका

साहित्य, ध्वनि, रूपान्तरण आ रंगमंच



सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

मूल कृति : गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ४४

मैथिली रेडियो नाटक : स्वयं सीखू मार्गदर्शिका

साहित्यिक शिल्प . ध्वनि-सौन्दर्य . रूपान्तरण . निर्देशन . प्रकाशन

मूल पुस्तकक लेखक आ अनुवादक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादकीय समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X

अध्ययनक आधार आ पद्धति

प्रस्तुत समीक्षा संलग्न “मैथिली रेडियो नाटक — स्वयं सीखू मार्गदर्शिका”क मैथिली पाठ, एक सँ उन्नीस धरि सभ प्रशिक्षण-अध्याय, बोधायनक “भगवदज्जुकम्” आधारित पूर्ण “साधु आ वेश्या” रेडियो-पटकथा, चारू परिशिष्ट आ पुस्तकमे उपस्थित अंग्रेजी पाठकें आधार बनबैत अछि। मूल संस्कृत प्रहसनक स्वतन्त्र आलोचनात्मक प्रति अथवा रिकॉर्ड कएल वास्तविक प्रस्तुति एहि अध्ययनक पाठाधार नहि अछि; तँ ध्वनि-निर्देशनक परिणामक विषयमे सम्भाव्यता आ परीक्षण-विधिक चर्चा अछि, सम्पन्न श्रवण-परीक्षणक दावा नहि।

अध्ययनक प्रश्न अछि: कोना मैथिली नाट्यक दृश्यात्मक क्रिया श्रव्य सूचना बनैत अछि; कोना संवाद, मौन, पात्रक स्वर आ क्षेत्रीय ध्वनिक सहायता सँ श्रोता अपन कल्पनात्मक रंगमंच बनबैत छथि; आ कोना पुस्तकक अध्यायवार शिक्षण-क्रम एक पूर्ण निर्माण-रचनाक परीक्षणमे परिवर्तित होइत अछि। ग्रन्थक शिक्षण-पद्धति, सांस्कृतिक स्थानीयता, उत्पादन-सम्भाव्यता, अधिकार-नीति आ स्वीकृत भाषिक रूपक मूल्याङ्कन अलग-अलग कएल गेल अछि।

पुस्तकक दूसरे भागमे उपलब्ध अंग्रेजी “Creating Maithili Radio Drama” पाठ प्रशिक्षणक अवधारणासभक तुलनात्मक रूप प्रदान करैत अछि। अंग्रेजी विभागमे १९ पाठ आ परिशिष्ट पुनरावृत्त अछि, मुदा मैथिली विभागक २२५ क्रमांकित पूर्ण रेडियो-पटकथाक समतुल्य अंग्रेजी पूर्ण क्रमांकित अनुवाद एहि संलग्नकमे नहि भेटल। तँ पुस्तककें पूर्ण द्विभाषिक रेडियो-पटकथा मानि लेब अनुचित होयत।

अनुक्रम

- 01 रेडियो नाटक : कानक सिनेमा
- 02 मैथिली रेडियो नाटकक परम्परा
- 03 विषय, श्रोता आ अवधि चुनब
- 04 मञ्चसँ माइक धरि : दृश्यकें ध्वनिमे बदलब
- 05 कथा-संरचना आ दृश्य-मोड
- 06 मानक रेडियो-पटकथाक ढाँचा

- 07 पात्रक स्वर-परिचय, स्वर-अभिनय आ पात्र-चयन
- 08 कानक लेल स्वाभाविक मैथिली संवाद
- 09 कथावाचक : सेतु, बैसाखी नहि
- 10 ध्वनि-परिकल्पना, वातावरण आ ध्वनिक दूरी
- 11 सङ्गीत, संक्रमण आ मौन
- 12 पूर्वाभ्यास आ निर्देशन
- 13 सरल उपकरणसँ रिकॉर्डिङ
- 14 सम्पादन, मिश्रण आ मास्टरिङ
- 15 मैथिली उच्चारण, शब्द-निखार आ सुगम्यता
- 16 अधिकार, सहमति, श्रेय आ प्रकाशन
- 17 प्रसारण आ पॉडकास्ट
- 18 मत्तविलास प्रहसनम् : हास्य-कथाक ध्वनि-रूप
- 19 भगवदज्जुकम् : रूपान्तरण-विधि

01 रेडियो नाटक : कानक सिनेमा

लेखक रेडियो नाटकक विधागत पहचान दृश्य-अनुपस्थितिक नकारात्मक परिभाषासँ नहि, ध्वनिक सर्जनात्मक साधनसँ करैत छथि। स्वर, ध्वनि-प्रभाव, सङ्गीत आ मौन—चारूकै नाटकीय अर्थ-निर्माणक घटक ठहराएब एहि पाठक केन्द्र-विचार अछि। समुद्र लेल लहरिक स्वर आ मृत्युदूतक प्रवेश लेल बसात तथा प्रतिध्वनिक उदाहरण बतबैत अछि जे रेडियोक दृश्य श्रोताक अनुभूतिमे बनैत अछि; एकरा मञ्चक छोट संस्करण मानब विधागत भूल होयत।

तर्कक सीमा सेहो स्पष्ट अछि। एकटा लहरि समुद्रक सम्भावना जनबैत अछि, मुदा पात्रक स्थान, घटना आ समय सदिखन एकहि ध्वनिसँ नहि बुझाएत। स्रोत स्वयं श्रोताक दृश्य-ज्ञानक अभावक चर्चा करैत अछि। एहि कारण आवाजक पहिचान, संकेतक परस्पर सम्बन्ध आ कथा-क्रमक जाँच रेडियो नाटकक सत्यापन-पद्धति बनैत अछि। अध्यायक आँखि मूनि सुनबाक अभ्यास एहि तर्कक व्यवहारमे उतारैत अछि।

पाठ-साक्ष्य : मूल मार्गदर्शिकाक अध्याय 1; एहि अध्यायक अभ्यास अथवा उदाहरण, जतय उपलब्ध अछि।

02 मैथिली रेडियो नाटकक परम्परा

द्वितीय पाठ आकाशवाणीक दरभंगा-पटना केन्द्र, मैथिली नाट्य-प्रसारण आ रेडियोसँ पॉडकास्ट धरि माध्यम-परिवर्तनक एक संक्षिप्त मानचित्र प्रस्तुत करैत अछि। लेखक विद्यापतिक पदावली, प्रहसन आ संस्कृत नाट्यक सूत्रधार-विदूषक पद्धतिक रेडियो-अनुकूलता देखबैत छथि। एहि क्रममे नाट्यपरम्पराक अर्थ केवल पुरातन गौरव नहि, नव माध्यममे प्रयोगयोग्य शिल्प अछि।

मुदा ई इतिहास मुख्यतः परिचयात्मक अछि; प्रसारित कार्यक्रमक नाम, तिथि, कलाकार आ संस्थागत अभिलेखक क्रमबद्ध सूची एहि अध्यायमे नहि अछि। स्रोतक वृद्ध श्रोतासँ साक्षात्कार करबाक अभ्यास उपयोगी शोध-द्वार खोलैत अछि, पर मौखिक स्मृतिमे तिथि आ शीर्षकक त्रुटि सम्भव रहैत अछि। भविष्यक रेडियो इतिहास लेल कार्यक्रम-पञ्जी, प्रसारण-तिथि आ रिकॉर्डिङ अभिलेखक मिलान चाही। एहने प्रमाण-सीमा लेखनक उपयोगिताकेँ घटबैत नहि, ओकरा उचित विभागत स्थान दैत अछि।

पाठ-साक्ष्य : मूल मार्गदर्शिकाक अध्याय 2, एहि अध्यायक अभ्यास अथवा उदाहरण, जतय उपलब्ध अछि।

03 विषय, श्रोता आ अवधि चुनब

विषय, अपेक्षित श्रोता आ समय—तीनूकेँ एक साथ निर्धारित करबाक आग्रह मार्गदर्शिकाक शिक्षण-विज्ञानकेँ मजबूत बनबैत अछि। स्रोतक “कार्यक्रमक प्रतिज्ञा” लेल देल खाली ढाँचा रचनाकारकेँ केवल कथा चुनबाक बदला श्रोता के अनुभव करताह, से स्पष्ट करबाक दबाव दैत अछि। दस मिनटक विद्यालयी नाटक आ पैतालीस मिनटक साहित्यिक रूपान्तरणक अन्तर व्यावहारिक अछि। एहि पद्धतिक आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे अवधि मात्र छोट-बड़ होएब नहि, कथासूत्रक सघनता, स्वरक भिन्नता आ श्रोताक सांस्कृतिक पूर्वज्ञान सेहो कथ्यक ग्रहणशीलता निर्धारित करैत अछि। कार्यक्रमक प्रतिज्ञा लिखलाक बाद प्रारम्भिक श्रवण-परीक्षा आ दर्शक-समूहक प्रतिक्रिया जोड़ला पर एहि अध्यायक उपयोगिता आर बढ़त।

पाठ-साक्ष्य : मूल मार्गदर्शिकाक अध्याय 3; एहि अध्यायक अभ्यास अथवा उदाहरण, जतय उपलब्ध अछि।

04 मञ्चसँ माइक धरि : दृश्यकेँ ध्वनिमे बदलब

मञ्चीय क्रियाकेँ रेडियो-पटकथामे अनुवाद मानबाक बदला रूपान्तरण मानल गेल अछि। स्रोत सात परिवर्तन निर्दिष्ट करैत अछि: प्रवेश-प्रस्थानक ध्वनि, संयत कथावाचक, दृश्यखंड, स्वगतक माइक-दूरी, दृश्य-हास्यक ध्वनि-हास्य, पाठ-संक्षेप आ स्वर-भेद। एतय रूपान्तरण मूल कथानककेँ नष्ट नहि करैत, बोधक इन्द्रिय बदलैत अछि। केबाड़ खुजब, माटिपर डेगक चाप आ स्वरक लग-दूर होएब दृश्य-सूचनाक ध्वन्यात्मक रूप अछि।

सातू परिवर्तनक नियमकेँ अनिवार्य यांत्रिक सूची नहि बनाओल जाय। उदाहरणार्थ, प्रत्येक प्रवेशपर डेगक ध्वनि अनावश्यक हो सकैत अछि जँ संवाद अथवा पृष्ठभूमि स्वतः स्थान स्थापित करैत हो। स्रोतक “कथावाचक सेतु, बैसाखी नहि” नियम एही अपव्ययकेँ रोकैत अछि। एक पृष्ठक मञ्चीय पाठक अभ्यास रूपान्तरणक नाटकीय लागत आ कलात्मक लाभक तुलना करबाक अवसर दैत अछि।

पाठ-साक्ष्य : मूल मार्गदर्शिकाक अध्याय 4: एहि अध्यायक अभ्यास अथवा उदाहरण, जतय उपलब्ध अछि।

05 कथा-संरचना आ दृश्य-मोड़

पाँचम अध्याय दृश्यक न्यूनतम नाटकीय गठन—प्रश्न, दबाव आ परिवर्तन—कै शिक्षणक केन्द्र बनबैत अछि। “हम कतऽ छी”, “के की चाहैत अछि”, “बाधा की अछि” आ “कोन श्रव्य घटना दृश्य बदलैत अछि”—ई प्रश्न कथा-स्थान आ चरित्र-इच्छाकै एकहि कार्यपत्रमे जोड़ैत अछि। रेडियोमे दृश्य-विभाजन श्रोता लेल भावात्मक दिशा-निर्देशक सेहो होइत अछि।

तथापि सभ नाटकीय दृश्यमे बाहरी घटना आवश्यक नहि; मौन, निर्णय अथवा स्वरक लहजामे फेरबदल सेहो दृश्य-मोड़ बनि सकैत अछि। एहि अर्थमे स्रोतक ढाँचा अभ्यासक आरम्भिक कसौटी अछि, अन्तिम कलात्मक सूत्र नहि।

भगवदज्जुकम्क आत्मा-बदलीक चमत्कार एहि सिद्धान्तकै स्पष्ट करैत अछि: देह अखनहुँ ओतहि अछि, मुदा स्वरक व्यवहार बदलिते कथा बदलि जाइत अछि।

पाठ-साक्ष्य : मूल मार्गदर्शिकाक अध्याय 5; एहि अध्यायक अभ्यास अथवा उदाहरण, जतय उपलब्ध अछि।

06 मानक रेडियो-पटकथाक ढाँचा

छठम अध्याय संकेत-संख्या आधारित पटकथा-विन्यासक ठोस प्रस्ताव करैत अछि। उद्घोषक, कथावाचक, पात्र, सङ्गीत आ ध्वनि—पाँच स्रोत-वर्गसँ संकेतक परिचय उत्पादन-दलक अलग-अलग उत्तरदायित्व व्यवस्थित करैत अछि। संकेत ११२ सन निर्दिष्ट क्रमांकसँ पुनः रिकॉर्ड करबाक उदाहरण एहि प्रणालीक व्यवहारिक प्रयोजन खोलैत अछि।

संलग्न “साधु आ वेश्या” पटकथाक १-२२५ क्रमांक निरीक्षणमे सतत क्रममे अछि; कोनो अंक छूटल नहि भेटल। ई पाठगत अनुशासनक प्रमाण अछि, वास्तविक प्रदर्शनक सफलताक प्रमाण नहि। प्रभावक तीव्रता, कलाकारक आगमन-समय आ ध्वनि-स्तर अलग पूर्वाभ्यास तथा रिकॉर्डिङमे परीक्षण योग्य रहत। स्रोत संकेतक स्वरूप देलाक अतिरिक्त ओकरा व्यवहारिक नमूनासँ प्रमाणित करैत अछि।

पाठ-साक्ष्य : मूल मार्गदर्शिकाक अध्याय 6; एहि अध्यायक अभ्यास अथवा उदाहरण, जतय उपलब्ध अछि।

07 पात्रक स्वर-परिचय, स्वर-अभिनय आ पात्र-चयन

सातम पाठ देहक दृश्य पहचानक अनुपस्थितिमे स्वरकें चरित्रक मुख्य साधन बनबैत अछि। भारी-पातर, वृद्ध-युवा, धीमी-तीव्र आवाजक भेद प्रारम्भिक वर्गीकरण अछि; गति, सुर आ साँसक अलग प्रयोग अभिनयक वास्तविक विशिष्टता रचैत अछि। साधु आ वसन्तसेनाक आत्मा-परिवर्तनमे एकहि कलाकारक कण्ठसँ दोसर पात्रक व्यवहार प्रदर्शित करबाक कठिनाई स्रोतक मौलिक शिक्षण उदाहरण अछि।

स्वर-भिन्नताकें केवल स्त्री-पुरुष वा वृद्ध-युवा द्वैतमे सीमित करब आलोचनात्मक सीमा होयत; व्यक्ति-विशेषक विराम, पदचयन आ बोलबाक प्रवृत्ति सेहो पात्रक पहचान अछि। स्रोतक चारि प्रकारक स्वरमे एक अनुच्छेद रिकॉर्ड करबाक अभ्यास यांत्रिक अनुकरणसँ आगाँ जा कऽ अर्थक विविधता सुनबाक प्रशिक्षण बनि सकैत अछि।

पाठ-साक्ष्य : मूल मार्गदर्शिकाक अध्याय 7; एहि अध्यायक अभ्यास अथवा उदाहरण, जतय उपलब्ध अछि।

08 कानक लेल स्वाभाविक मैथिली संवाद

आठम अध्याय छोट वाक्य, आवश्यकतानुसार नामक सम्बोधन आ क्रियाकें बोलिते स्पष्ट करबाक तीन महत्त्वपूर्ण उपाय दैत अछि। लेखक “शाण्डिल्य, कतऽ छह?” आ वस्तु खोजबाक वैद्यक प्रश्न सन उदाहरणसँ दृश्यसूचनाकें संवादमे प्रवेश करबैत छथि। ई रेडियोक श्रव्य-प्रकृतिक सीधा स्वीकार अछि।

मुदा पात्र द्वारा अपन हरेक क्रियाक घोषणा कृत्रिम होएत। उदाहरण-पटकथामे सूत्रधारक “हम भीतर जा रहल छी” सन पाँति स्थान स्पष्ट करैत अछि; दोहरायल प्रयोग भेलापर ई अभिनयक बदला रिपोर्टिंग बनि सकैत अछि। संवादक स्वाभाविकता जाँचबाक उचित उपाय पात्रक परिस्थिति बुझि बिना पटकथा देखनहि सुनब अछि। मैथिली भाषाक स्वरलहरी आ साहित्यिक पद-संक्षेपक बीच भेद राखब एहि पाठक आन्तरिक चुनौती अछि।

पाठ-साक्ष्य :मूल मार्गदर्शिकाक अध्याय ४:एहि अध्यायक अभ्यास अथवा उदाहरण, जतय उपलब्ध अछि।

09 कथावाचक : सेतु, बैसाखी नहि

नवम पाठ कथावाचकके अनिवार्य कथास्थल-सम्बन्धी सेतु मानैत अछि, सर्वज्ञ व्याख्याता नहि। जँ पात्रक रुदन सुनाइ पड़ैत अछि तँ ओकर दुःखक शब्दशः पुनर्व्याख्या श्रोताक सहभागिता घटबैत अछि। स्रोतक “सेतु, बैसाखी नहि” सूत्र श्रोताकेँ अर्थ बनाबवाक अवसर प्रदान करैत अछि।

पटकथामे कथावाचकक उपयोग स्थल-परिवर्तन आ आत्मा-बदलीक स्पष्टताक लेल उल्लेखित अछि। पुस्तकक अध्याय १९मे कथावाचक केवल छह ठाम अबैत छथि—एहन कथन अछि; एहि संख्याक स्वतंत्र परीक्षण संकेत-सूची आधारपर करब उचित होयत, किएक तँ उद्घोषक आ कथावाचककेँ एकहि प्रकारक उपस्थिति मानब नहि चाही। निर्देशनक दृष्टिसँ संयमित कथावाचन दृश्य-अभिनयक स्थान सुरक्षित रखैत अछि।

पाठ-साक्ष्य : मूल मार्गदर्शिकाक अध्याय 9; एहि अध्यायक अभ्यास अथवा उदाहरण, जतय उपलब्ध अछि।

10 ध्वनि-परिकल्पना, वातावरण आ ध्वनिक दूरी

दसम पाठ ध्वनिक तीन तह बनबैत अछि: वातावरण, घटना आ अर्थसूचक संकेत। उपवनक कोइली-भौरा, केबाड़क ध्वनि, शंख अथवा गर्जन अलग-अलग नाटकीय भूमिका निभबैत अछि। “ध्वनि कमसँ, अर्थ बेसीसँ” निर्देश रेडियो-अलंकरणक अपव्ययकें सीमित करैत अछि।

विशेष रूपसँ स्थानीय क्षेत्र-रिकॉर्डिङक सुझाव महत्त्वपूर्ण अछि। मिथिलाक भोर, पोखरिक कात आ हाटक आवाज निजी ध्वनि-कोषमे संग्रह करबाक प्रस्ताव सांस्कृतिक वातावरणकें तैयार सजावटी सामग्रीसँ अलग करैत अछि। मुदा क्षेत्रीय ध्वनिक उपयोगमे स्थान, रिकॉर्डिङ-अनुमति, गोपनीयता आ श्रोता लेल श्रव्य स्पष्टताक लेखा राखब आवश्यक अछि। एहि सावधानीसँ लोकध्वनिक दस्तावेजी मूल्य बढ़त।

पाठ-साक्ष्य : मूल मार्गदर्शिकाक अध्याय 10; एहि अध्यायक अभ्यास अथवा उदाहरण, जतय उपलब्ध अछि।

11 सङ्गीत, संक्रमण आ मौन

एकादश अध्याय सङ्गीतक कार्य समय-संक्रमण, वातावरण आ भाव-संकेत निर्धारित करैत अछि। समापन आ पुनः आरम्भक समान धुन कथाक बनावटमे स्मृति रचि सकैत अछि। मोनोक काम मौनक प्रयोग एहि पाठक विशेष बल अछि—मौन शून्यता नहि, कथनक अर्थगर्भित विराम अछि।

भगवदज्जुकम्क संकेत १२१मे अन्तिम साँसक बाद क्षणिक पूर्ण मौन निर्देशित अछि। मृत्यु-सूचनाक क्षणमे मौनक प्रभाव पाठक पृष्ठपर सम्भावित अछि, मुदा वास्तविक समय, साँसक आवृत्ति आ सङ्गीतक प्रवेश सुनला पर अलग होएत। एहि कारण गीत-संकेतक अवधि आ संवाद-स्तरक परस्पर तौल निर्देशकक प्रयोगसँ प्रमाणित होएबाक चाही।

पाठ-साक्ष्य : मूल मार्गदर्शिकाक अध्याय 11, एहि अध्यायक अभ्यास अथवा उदाहरण, जतय उपलब्ध अछि।

12 पूर्वाभ्यास आ निर्देशन

द्वादश अध्याय चारि पूर्वाभ्यासक भेद स्पष्ट करैत अछि: अर्थ, चरित्र-सम्बन्ध, समय-व्यवस्था आ माइक्रोफोनक तकनीक। ई विभाजन प्रशिक्षणक एक समुचित क्रम अछि; कलाकार पहिने दृश्य किएक घटैत अछि से बुझथि, तकर बाद क्रियान्वयन पर जायथि।

निर्देशक द्वारा कलाकारकें नहि देखि केवल सुनबाक सुझाव रेडियो माध्यमक मूल परीक्षा अछि। पहिल पूर्वाभ्यासमे सहज लगनिहार संवाद रिकॉर्डिङमे अस्पष्ट हो सकैत अछि। स्रोत ई अंतर उजागर करैत अछि, तथापि अभिनय-सुधारक अलग लिखित टिप्पणी, त्रुटि-वर्गीकरण आ दोसर टेकक तुलनाक योजना जोड़ला पर निर्देशकीय मूल्यांकन आर अधिक अभिलेखयोग्य बनत।

पाठ-साक्ष्य : मूल मार्गदर्शिकाक अध्याय 12; एहि अध्यायक अभ्यास अथवा उदाहरण, जतय उपलब्ध अछि।

13 सरल उपकरणसँ रिकॉर्डिङ

तेरहम अध्याय स्टूडियोक महँगाइकेँ अनिवार्य पूर्वशर्त नहि मानि शान्त कोठली, माइकक स्थिति आ पृष्ठभूमि-शोरक नियन्त्रण बतबैत अछि। छोट-छोट खण्डमे रिकॉर्डिङ, गलतीक बाद मौन दऽ पुनर्वाचन आ आरम्भमे स्वर-नमूना राखबाक नियम उत्पादनक निरन्तरता लेल उपयोगी अछि।

स्रोत संकेत १-२१क प्रारम्भिक खण्ड रिकॉर्ड करबाक अभ्यास दैत अछि। ओकरा शिक्षण-परीक्षाक रूपमे देखबाक चाही, प्रकाशित ध्वनिरचना मानि नहि। स्रोत शान्त कोठलीक श्रेय कएलाक संग माइकक दूरीक सामान्य सुझाव दैत अछि, मुदा तकनीकक परिणाम उपकरण, कलाकारक उच्चारण आ कोठलीक ध्वनि-विज्ञानपर निर्भर रहत। एतय स्वतन्त्र श्रवण-परीक्षण अनिवार्य अछि।

पाठ-साक्ष्य :मूल मार्गदर्शिकाक अध्याय 13;एहि अध्यायक अभ्यास अथवा उदाहरण, जतय उपलब्ध अछि।

14 सम्पादन, मिश्रण आ मास्टरिङ

चौदहम अध्याय संवाद, वातावरण, घटना-ध्वनि आ सङ्गीतक चारि तहपर सम्पादनक योजना दैत अछि। क्रम—पहिने संवादक अर्थ आ गति, फेर विशेष प्रभाव आ सङ्गीत—पटकथा-केन्द्रित उत्पादनक सुदृढ निर्णय अछि। लेखक Audacity आ Fairlight सन औजारक उल्लेख उपयोगक उदाहरणक रूपमे करैत छथि, एकमात्र समाधानक रूपमे नहि।

वातावरणकें संवादक लगभग बीस प्रतिशत रखबाक सलाह व्यवहारिक आरम्भिक अनुमान अछि, पर ध्वनि-मापनक सर्वमान्य नियम नहि; अलग वक्ता, रचना आ उपकरणमे तौल बदलत। निर्यातक बाद मोबाइलपर सुनबाक जाँच स्रोतक महत्त्वपूर्ण यथार्थपरक कसौटी अछि। तकनीकी सफाई नाटकीय अर्थक स्थान नहि लऽ सकैत अछि—एहि अध्यायक आलोचनात्मक उपलब्धि एही क्रममे अछि।

पाठ-साक्ष्य : मूल मार्गदर्शिकाक अध्याय 14, एहि अध्यायक अभ्यास अथवा उदाहरण, जतय उपलब्ध अछि।

15 मैथिली उच्चारण, शब्द-निखार आ सुगम्यता

पन्द्रहम पाठ मैथिली उच्चारण, क्षेत्रीय रूप, कठिन संस्कृत पद आ प्रतिलिपिक सहज उपलब्धताकें सम्पादनक अंग बनबैत अछि। रेडियोपाठमे “अछि” आ “छथि”क भेद केवल व्याकरणिक नहि, पात्रक सम्मानसूचक सम्बन्धक भाग सेहो अछि। शुद्ध भाषा-निर्णय कऽ देवाक बदला कानसँ जाँच करबाक प्रस्ताव माध्यमक अनुकूल अछि।

एतय भाषा-निखारक अर्थ स्थानीय बोली हटाएब नहि होयत। पात्रक सामाजिक क्षेत्र, नाटकीय काल आ रचनाक मूल भाषा विचलित कएल बिना संवादकें श्रव्य बनाओल जाय। सहायक प्रतिलिपि, स्पष्ट नामसूची आ सुगम्य प्रस्तुतिक प्रस्ताव मौखिक सांस्कृतिक रचनाकें वृहत्तर पाठकीय समुदाय धरि पहुँचबैत अछि।

पाठ-साक्ष्य : मूल मार्गदर्शिकाक अध्याय 15, एहि अध्यायक अभ्यास अथवा उदाहरण, जतय उपलब्ध अछि।

16 अधिकार, सहमति, श्रेय आ प्रकाशन

सोलहम पाठ मूल अधिकार, अनुवाद-रूपान्तरणक श्रेय, कलाकारक सहमति आ सङ्गीत-ध्वनिक अनुज्ञाकें उत्पादनक पूर्वशर्त बनबैत अछि। ई संरचना सार्थक अछि; कोनो रचना ऐतिहासिक संस्कृत नाटक होएब मात्रसँ नव अनुवाद, आधुनिक रिकॉर्डिङ अथवा ध्वनि-प्रभावक स्वतन्त्र अधिकार समाप्त नहि होइत अछि।

स्रोत प्रत्येक ध्वनि फाइलक निर्माता, स्रोत, अनुमति आ उपयोग-अवधिक रजिस्टर राखबाक सुझाव दैत अछि। एहि तर्ककें पूर्ण करबाक लेल सहमतिक लिखित सीमा, वितरण-अवधि, पुनःउपयोग आ वापसीक व्यवस्था सेहो परीक्षण योग्य अछि। प्रकाशित प्रस्तुति लेल सांकेतिक श्रेय-वाचन पर्याप्त हो सकैत अछि, मुदा अभिलेखीय अधिकार-पञ्जी अलग रहबाक चाही।

पाठ-साक्ष्य : मूल मार्गदर्शिकाक अध्याय 16; एहि अध्यायक अभ्यास अथवा उदाहरण, जतय उपलब्ध अछि।

17 प्रसारण आ पॉडकास्ट

सतरहम अध्याय यूट्यूब, पॉडकास्ट, आकाशवाणी-सामुदायिक रेडियो, विदेह-सन ई-पत्रिका आ साझा श्रवण-प्रसारक रूपरेखा बनबैत अछि। पाठकक नाट्यरचना तकबाक पहुँच तकनीकी वितरण मात्र नहि, शीर्षक, खण्ड, कलाकार-सूची आ समय-संकेतक सम्पादकीय व्यवस्था सेहो अछि।

तथापि “पहिल नाटक सय श्रोता, तेसर हजार” सन प्रेरक वाक्य भविष्यक वास्तविक संख्या नहि मानल जाय। स्रोतक वार्षिक उत्पादनक सुझाव अभिलाषात्मक ताल अछि। प्लेटफॉर्मक नियम, अनुज्ञा, भौगोलिक उपलब्धता आ प्रसारण-विशेषक तकनीकी मानदण्ड बदलावशील होइत अछि; प्रकाशित नाटकक अंतिम जाँच तत्कालीन शर्तक अनुसार करबाक चाही।

पाठ-साक्ष्य :मूल मार्गदर्शिकाक अध्याय 17;एहि अध्यायक अभ्यास अथवा उदाहरण, जतय उपलब्ध अछि।

18 मत्तविलास प्रहसनम् : हास्य-कथाक ध्वनि-रूप

अठारहम पाठ “मत्तविलास प्रहसनम्”क लुप्त कपाल-पात्रकैँ नाटकीय वस्तु आ श्रव्य-रहस्यक केन्द्र मानैत अछि। दृश्य-हास्यक वास्तविक चुनौती—जे नहि देखाइत अछि ओकर खोज—श्रोता लेल ध्वनिक दिशा, पात्रक उद्विग्नता आ संवादक भ्रमसँ रचय पड़त। सूत्र कथानकक वस्तुकैँ श्रव्य संकेतमे बदलबाक एक उपयोगी उदाहरण अछि।

मुदा एहिमे पूर्ण क्रमांकित अलग मत्तविलास रेडियो-पटकथा संलग्न देखाइत नहि अछि; अध्याय मुख्यतः रूपान्तरणक विधि आ उपलब्ध अनुवादक दृष्टान्त दैत अछि। एहि सीमाकैँ स्पष्ट राखब चाही, नहि तँ पाठक उदाहरणक संक्षिप्त विवेचनकैँ एक पूर्ण निर्माण-अनुलग्नक समझि सकैत छथि। संस्कृत नाट्यक पाठ-शिल्प आ रेडियो-माध्यमक अन्तर्सम्बन्ध एहि अध्यायक वास्तविक उपलब्धि अछि।

पाठ-साक्ष्य : मूल मार्गदर्शिकाक अध्याय 18; एहि अध्यायक अभ्यास अथवा उदाहरण, जतय उपलब्ध अछि।

19 भगवदज्जुकम् : रूपान्तरण-विधि

उन्नीसम पाठ पहिनुक प्रशिक्षणकें “भगवदज्जुकम्”क पूर्ण ध्वनि-पटकथासँ मिलबैत अछि। लेखक सूत्रधार-विदूषकक प्रस्तावना, कथावाचकक नियंत्रित प्रवेश, स्थान-बोध, श्रव्य भ्रम आ आत्मा-बदलीक अभिनय-विधानकें विशिष्ट संकेत-समूहसँ जोड़ैत छथि। एहि कारण ई पुस्तक स्वतन्त्र सिद्धान्त-ग्रन्थ आ व्यवहारिक निर्माण-पुस्तिका दुनू रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

संकेत ६५-६६क मोरक केकारवसँ “बाघ”क भ्रम, संकेत ११९-१२२मे दंश-पतन-मौन, आ २०८-२१६मे आत्माक पुनःस्थापन ऐहन ठाम अछि जतय ध्वनिक जानकारी स्वयं कथानक बनैत अछि। तथापि “संवाद यथावत्”क प्रकाशकीय दावाक पूर्ण मिलान लेल स्वतंत्र मूल संस्कृत पाठ, उपलब्ध मैथिली अनुवाद आ रेडियो-रूपान्तरक पाँति-दर-पाँति तुलनात्मक सूची आवश्यक होयत। ई मार्गदर्शिका अपन भीतर ऐहन पूर्ण आलोचनात्मक पाठान्तर-सारणी नहि दैत अछि।

पाठ-साक्ष्य : मूल मार्गदर्शिकाक अध्याय 19; एहि अध्यायक अभ्यास अथवा उदाहरण, जतय उपलब्ध अछि।

पूर्ण रेडियो-पटकथा : आठ खण्डक नाट्य-परीक्षण

प्रथम खण्ड — प्रस्तावना (संकेत १-२१)

शीर्षक-धुनसँ प्रारम्भ भऽ उद्घोषक, कथावाचक, सूत्रधार आ विदूषक श्रोताकें परम्परागत नान्दी आ नाट्यजगतमे प्रवेश करबैत छथि। संकेत ७क केबाड़क आवाज दृश्य-स्थान बनबैत अछि; संकेत २१क सेतु-धुन नाटकक मुख्य कथामे संक्रमण करैत अछि। उद्घोषकक स्पष्ट श्रेय-वाचन आ प्रस्तावनाक मञ्चीय लय दुनू प्रयोजन एक संग साधैत अछि।

दोसर खण्ड — गुरु आ शिष्य (संकेत २२-५७)

भोरक ध्वनिक पृष्ठभूमि, साधुक पुकार आ शाण्डिल्यक हाँफैत प्रवेश शिष्यक अनुपस्थितिक हास्य रचैत अछि। देह-आत्माक शास्त्रीय प्रश्न व्याख्यान नहि रहि गुरु-शिष्यक असहमतिक संवाद बनैत अछि; मुदा अधिक दीर्घ दार्शनिक पाँतिक श्रव्य ग्रहणशीलता वास्तविक पाठाभ्याससँ जाँचय पड़त।

तेसर खण्ड — कलम (संकेत ५८-७९)

उपवनक कोइली आ पातक सरसराहट स्थान-विशिष्ट अछि। संकेत ६५क झाड़ी-मोरक ध्वनिक बाद संकेत ६६मे शाण्डिल्यक बाधक भय श्रोताकें जे देखाइत नहि अछि, तकर गलत अनुमानमे भागी बनबैत अछि। हास्यक कारण दृश्य-अदृश्यता नहि, पात्रक श्रव्य भ्रान्ति अछि।

चारिम खण्ड — गीत आ नाटकीय पूर्वसंकेत

वसन्तसेनाक गान, पात्रक आगमन आ दूतक उपस्थितिक पूर्वभूमि ध्वनिक लयकें बदलैत अछि। एहि भागमे गीतकें चरित्रक सामाजिक पहचान आ आगाँक संकटसँ अलग सजावटी अन्तराल मानब नहि चाही। मधुरता आ आसन्न अनिष्टक विरोध नाटकीय तनाव निर्माण करैत अछि।

पाँचम खण्ड — दंश आ मृत्यु (संकेत ११०-१२२ सहित)

संकेत १११क फुफकार, संकेत ११५क देह खसबाक ध्वनि आ संकेत १२१क अन्तिम साँससँ पाछाँ मौन—ई क्रम दृश्य क्रियाकें श्रव्य घटना बनबैत अछि। वसन्तसेनाक अंतिम उच्चारण, परिचारिकाक प्रतिक्रिया आ मौनक समयमितिक परस्पर तौल ही दृश्यक वास्तविक प्रभाव निर्धारित करत।

छठम खण्ड — आत्मा-विनिमय

कथानकक केन्द्रीय रूपान्तरण अभिनेताक स्वरमे नाट्य-व्याकरणक फेरबदल माँगैत अछि। साधुक देहमे वसन्तसेनाक व्यवहार आ वसन्तसेनाक देहमे गुरु-स्वभाव श्रोताकै केवल नाम नहि, अलग सुर आ व्यवहारसँ बुझाएब आवश्यक अछि। एहि दृश्यक सफलता केवल पाठसँ पूर्णतः मापल नहि जा सकैत अछि।

सातम खण्ड — माय, प्रेमी आ वैद्य (संकेत १५१-२०७)

संबन्धीजन परिचित देह देखितो अपरिचित व्यवहार सुनैत छथि। माय, प्रेमी आ वैद्यक अलग-अलग प्रत्याशा भ्रम उत्पन्न करैत अछि। संकेत २०१-२०६मे व्याकरण-प्रसंग चिकित्सीय अधिकारक हास्यात्मक उलट-पुलट करैत अछि; भाषा एतय कथाक चतुराई नहि, पात्रक सत्ता-व्यवहारक साधन अछि।

आठम खण्ड — समाधान आ भरतवाक्य (संकेत २०८-२२५)

दूतक फेर आगमनक पाछाँ संकेत २११-२१६ आत्मा-पुनर्स्थापनक दिशा बतबैत अछि। संकेत २२३क भरतवाक्य आ २२४क श्रेय-वाचन पारम्परिक नाट्य-समापनकै आधुनिक प्रसारणक सामाजिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ैत अछि; अन्तिम शीर्षक-धुन सम्पूर्ण नाटकक ध्वनि-स्मृति वापस अनैत अछि।

पटकथा-संकेतक पाठगत सत्यापन

सम्पूर्ण रेडियो-पटकथामे १-२२५ क्रमांकित संकेत उपस्थित अछि। क्रमांकनक पाठगत निरीक्षणमे कोनो क्रमांक छूटल नहि भेटल। मूल पुस्तकमेनाटकक आठ खण्ड आ लगभग ३५ मिनटक अनुमान दियेल अछि; स्रोतमे वास्तविक स्वर-रिकॉर्डिङ नहि भेटलाक कारण प्रसारणक वास्तविक अवधि वा ध्वनिगुणक निर्णय एतय नहि कएल गेल अछि। संकेत क्रमांकक उपस्थिति, संकेतक ध्वनि-निर्देशक स्पष्टता आ अन्तिम साकार ध्वनिक गुणवत्ता तीन भिन्न परीक्षण थिक।

चारू परिशिष्टक मूल्याङ्कन

क. संकेत-पत्रक

स्रोत, शब्दारम्भ, अवधि आ स्थिति सहित संकेत-पत्रक रिकॉर्डिङक भूल, पुनःटेक आ सम्पादनक कार्यपञ्जी सुरक्षित करैत अछि। कोनो संकेत चुकलाक कारण चिन्हबाक सरल लेखा-साधन अछि।

ख. ध्वनि-शब्दावली

संकेत, वातावरण, फोली, सेतु, स्वगत, परिप्रेक्ष्य, मिश्रण, मास्टर आ ध्वनि-हस्ताक्षर सन पदक व्यवहृत व्याख्या प्रशिक्षणक नव पाठक लेल उपयोगी अछि। पारिभाषिक पदक मैथिली रूपक संग मूल तकनीकी पद राखबाक नीति सुविचारित अछि।

ग. निर्माण कार्यपत्र

कार्यक्रमक प्रतिज्ञा, दृश्य-पत्र, पात्रक स्वर-पत्र आ ध्वनि-संकेत पत्रक द्वारा सिद्धान्तकें उत्पादन-दलक लिखित निर्णयमे बदलल गेल अछि। ई रूपरेखा अभ्यासक परिणाम संरक्षित रखैत अछि।

घ. अन्तिम गुणवत्ता जाँच

पटकथा देखल बिना कथा बुझाएब, पात्रक स्पष्ट श्रव्य पहिचान, संवादपर सङ्गीतक अतिक्रमण नहि होएब, मोबाइल श्रवण-परीक्षा आ अधिकार-श्रेयक पूर्णता—ई सभ अन्तिम जाँचक सार्थक प्रश्न अछि। कागजपर टिक लगाओल मात्रसँ अन्तिम ध्वनि सफल सिद्ध नहि होइत अछि; वास्तविक श्रवण-परीक्षणक अभिलेख चाही।

समग्र साहित्यिक आ शिक्षणात्मक मूल्याङ्कन

ग्रन्थक सर्वाधिक विशिष्ट उपलब्धि ई अछि जे मैथिली नाट्यशास्त्रक पाठ, ध्वनि-निर्माणक अनुशासन आ प्रकाशनक सामाजिक जिम्मेदारीकें एकहि शिक्षण-क्रममे बाँधैत अछि। भाषा केवल उदाहरणक वस्तु नहि, रचना आ उत्पादनक सृजनात्मक माध्यम अछि। अध्याय-क्रम रचनाकारकें श्रोता आ

अवधि चुनबाक आरम्भिक निर्णयसँ लऽ कऽ रिकॉर्डिङ, सम्पादन आ वितरणक अन्तिम सोपान धरि पहुँचबैत अछि।

ग्रन्थक सीमा सेहो निर्धारित अछि। रेडियो नाटकक इतिहास परिचयात्मक अछि; सम्पूर्ण प्रामाणिक प्रसारण-पञ्जी नहि। मत्तविलासक अध्यायमे पूर्ण स्वतंत्र संकेत-क्रमांकित रेडियो-पटकथा उपस्थित नहि। भगवदज्जुकम्क “मूल संवाद सुरक्षित” कथनक प्रमाण-पूर्ण परीक्षण लेल स्वतंत्र मूल संस्कृत आ मौलिक मैथिली पाठक व्यवस्थित पाठान्तर-पञ्जी आवश्यक अछि। वास्तवमे साकार ध्वनि-प्रस्तुति बिना स्वरक सफलता वा ३५ मिनटक अनुमानक अन्तिम पुष्टि सम्भव नहि।

एहि सीमासभक बादो ग्रन्थ प्रयोगयोग्य प्रशिक्षण-पुस्तिका अछि। विशेषतः मूलक संस्कृत-नाट्यक संरचना सँ आधुनिक श्रव्य प्रस्तुति धरि रूपान्तरणक व्यावहारिक पुल बनबैत अछि। उत्कृष्टताक निर्णायक कसौटी एतहि रहत— पाठक पुस्तक पढ़लाक बाद एक स्वतंत्र श्रव्य नाटक तैयार करथि, आ श्रोता बिना पटकथा देखनहि पात्र, स्थान, संघर्ष आ परिवर्तित स्थितिक अर्थ बुझि सकथि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। मैथिली रेडियो नाटक — स्वयं सीखू मार्गदर्शिका : लेखन, रूपान्तरण, निर्देशन, ध्वनि-परिकल्पना, रिकॉर्डिङ, सम्पादन आ प्रकाशन। संलग्न अध्ययनाधीन Word संस्करण।

गजेन्द्र ठाकुर। संस्कृत साहित्य-संग्रह : १३ पुस्तकक संयुक्त संस्करण। विशेषतः बोधायन-प्रहसन भगवदज्जुकम् आ मत्तविलास प्रहसनम् विषयक संयुक्त पाठ। संलग्न Word संस्करण।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ४४

मैथिली रेडियो नाटकक लेखन, ध्वनि-विन्यास,
अभिनय, निर्देशन आ प्रकाशनक अध्ययन।
उन्नीस अध्यायक स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा,
“साधु आ वेश्या”क २२५ ध्वनि-संकेतक
परीक्षण आ चारु परिशिष्टक मूल्याङ्कन।

विदेहक मूल साहित्यिक अभिलेख



www.videha.co.in



GitHub Videha Archive

मूल लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : आशीष अनचिन्हार